The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 1 - 2018

भारतीय अर्थव्यवस्था में नकदविहीन लेनदेन के माध्यम: एक अध्ययन

कन्हैया लाल*

प्रस्तावना

वित्त, किसी भी अर्थव्यवस्था में रक्त के समान भूमिका निभाता है! भारत एक विशाल राष्ट्र है! जिसकी विशालता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि, भारत आबादी के लिहाज से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश तथा जीडीपी के आधार पर दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश (क्रय- शक्ति समता आधार पर) है! ऐसे विशाल राष्ट्र में विमुद्रीकरण की घटना से अर्थव्यवस्था में 500 व 1000 रूपये के नोट बंद हो जाने पर लोगों के पास मौजूदा हालत में दो विकल्प ही उपलब्ध थे! पहला विकल्प, बंद हुए नोटों को बैंक में जमा करा दें अथवा दूसरा विकल्प, इन पुराने नोटों को नए जारी नोटों के रूप में बदला जाए! हालांकि सरकार अपने स्तर पर श्रेष्ठ प्रयास कर रही थी, लेकिन फिर भी समय पर नए नोटों की पर्याप्त आपूर्ति ना होने के कारण भारत में मुद्रा कि अचानक कमी उत्पन्न हो गयी! नतीजन देश में आर्थिक गतिविधिया में सुस्ती देखी गयी! इन हालातो में यह प्रश्न उठना वाजिब था कि, मुद्रा के अभाव में राष्ट्र में आर्थिक गतिविधियां कैसे संचालित होगी अर्थात मुद्रा का विकल्प क्या हो सकता है! ऐसे परिदृश्य में नकदविहीन लेनदेन (कैशलेस) एक प्रभावी विकल्प बन कर उभरा है! यह पत्र इसी परिदृश्य में लिखा गया है! इस पत्र में सर्वप्रथम नकदविहीन लेनदेन का अर्थ बताएं गया है तथा फिर भारतीय अर्थव्यवस्था में नकदविहीन लेन-देन के उपलब्ध माध्यमों में से कुछ प्रमुख माध्यमों को समझने की कोशिश इस पत्र में की गई है!

सूत्रशब्द: अर्थव्यवस्था, विमुद्रीकरण, जीडीपी, क्रय-शक्ति समता, नकदविहीन लेनदेन!

नकदविहीन लेनदेन का अर्थ

नकद-रहित लेनदेन अर्थात बिना नकद के वस्तुओं एवं सेवाओं का आर्थिक लेन-देन होता है! दूसरे शब्दों में नकदविहीन लेनदेन से आशय उन समस्त व्यवहारों से है, जिसमें वस्तु या सेवा को खरीदने के लिए भुगतान के रूप में नकदी का प्रयोग नहीं किया जाता!

*व्याख्याता, वाणिज्य, राजकीय उच्च माध्मिक विद्यालय, पिण्डवाडा, सिरोही!
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

अर्थात क्रेता एवम विक्रेता वस्तुओं और सेवाओं को नकद रहित रूप में लेनदेन करते हैं तथा नकदी के स्थान पर इन लेनदेन में चेक, ड्राफ्ट, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, मोबाइल बैंकिंग इत्यादि की सहायता से भुगतान किया एवं पाया जाता है!

नकदविहीन लेनदेन के माध्यम

भारत में मुद्रा के विकल्प के रूप में कई माध्यम उभरकर सामने आए हैं! जिनमें से कुछ प्रमुख माध्यम निम्नलिखित है:-

चेक द्वारा भुगतान

नकदविहीन लेनदेन का यह सबसे प्राचीन तरीका है! जिसके बारे में लगभग सभी लोग जानते है! इसमें एक व्यक्ति, दुसरे व्यक्ति के पक्ष में एक विशिष्ट राशि का चेक लिखता है! दूसरा व्यक्ति (चेक प्राप्तकर्ता) उसे अपने बैंक में जमा कराता है तथा समाशोधन प्रक्रिया से चेक का भुगतान हो जाता है! चेक, भुगतान का एक लिखित एवं प्रमाणित साधन है! लेकिन चेक के संबंध में एक समस्या यह रहती है कि यदि चेक में कुछ तकनीकी कमी रह जाए जैसे हस्ताक्षर का मिलान ना होना, खाते में अपर्याप्त राशि, ऐसी स्थिति में चेक अनादरित हो जाता है तथा भुगतान का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता है!

ड्राफ्ट द्वारा भुगतान

चेक के अनादरित होने की संभावना प्राय बनी रहती है! अतः लम्बे समय से ही बैंकिंग क्षेत्र में डिमांड ड्राफ्ट को इस मामले में एक विश्वसनीय साधन के रूप में देखा गया है! डिमांड ड्राफ्ट में भुगतान प्राप्ति की गारंटी बैंक हस्ताक्षरित करके देता है! ड्राफ्ट में देनदार द्वारा बैंक में जाकर लेनदार के पक्ष में ड्राफ्ट बनाया जाता है! इस हेतु उसे बैंक में अग्रिम धन जमा कराना पड़ता है! फिर लेनदार उस ड्राफ्ट का भुगतान अपने बैंक से प्राप्त कर सकता है! सामान्यतः ड्राफ्ट का प्रयोग बड़े भुगतानों हेतु किया जाता है क्योंकि ड्राफ्ट में भुगतान असफल होने का डर नहीं रहता! लेकिन चेक तथा ड्राफ्ट के संबंध में एक सामान्य परेशानी यह रहती है कि इन दोनों का भुगतान प्राप्त करने हेतु हमें बैंक में जाना पड़ता है तथा आज की व्यस्त दिनचर्या में कई बार यह कारण परेशानी का सबब बन जाता है!

प्लास्टिक मनी द्वारा भुगतान

प्लास्टिक मनी से आशय है, प्लास्टिक से बने कार्ड जिनका प्रयोग धन का भुगतान करने एवम धन को प्राप्त करने हेतु किया जाता है! प्लास्टिक मनी ने व्यक्ति को नकद पास में रखने की झंझट से छुटकारा दिलाया है! इसलिए विमुद्रीकरण के बाद इनका प्रचलन काफी तेज गति से बड़ा है! आधुनिक जीवनशैली में समय काफी महत्वपूर्ण तत्व है! इसलिये आज के समय में चेक व् ड्राफ्ट अधिक लोकप्रिय साधन नहीं माने जा सकते! ऐसे परिदृश्य में बैंकिंग कार्ड अधिक सुरक्षित व सुविधाजनक साधन बन कर उभरे है! रुपे कार्ड, मास्टर-कार्ड, वीजा कार्ड इत्यादि बैंकिंग-कार्ड भुगतान के प्रमुख उदाहरण है जिनके उपयोग से व्यापारी एवं ग्राहक के समय व धन दोनों की बचत होती है! सामान्यतः बैंक द्वारा कई प्रकार के कार्ड जारी किए जाते हैं! बैंक द्वारा जारी कुछ प्रमुख कार्ड मे बैंक प्रीपेड कार्ड, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड इत्यादि शामिल है! इनका विवरण निम्नलिखित है :-

बैंक प्रीपेड कार्ड

यह कार्ड नकद के समतुल्य होता है! यह प्री लोडेड होता है! मोबाइल रिचार्ज की तरह इसे भी कई बार रिचार्ज किया जा सकता है तथा इसका

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

प्रयोग किसी भी पोस मशीन द्वारा किया जा सकता है! इसका उपयोग बिल्कुल सुरक्षित है!

प्रकिया:- बैंक प्रीपेड कार्ड प्राप्त करने हेतु, सर्वप्रथम केवाईसी के साथ बैंक में खाता खोला जाता है, फिर प्रीपेड कार्ड के लिए आवेदन किया जाता है! इसके उपरांत बैंक से पिन अथवा MPIN प्राप्त किया जाता है! कार्ड सेवा सक्रिय होने के बाद, कार्ड में धन जमा करने हेतु नेट बैंकिंग का प्रयोग कर सकते हैं अथवा बैंक की शाखा में जाकर भी कार्ड में पैसा डलवाया जा सकता है! कार्ड में पैसा डलवाने के बाद आवश्यकतानुसार कार्ड का प्रयोग कहीं पर भी किया जा सकता है!

प्रीपेड कार्ड प्रयोग में आसान व सुरक्षित है, लेकिन इससे एक सीमित मात्रा तक ही लेन-देन कर सकते हैं!

डेबिट कार्ड से भुगतान

यह उन व्यक्तियों के लिए एक अच्छा साधन है, जिन्हें बैंकों की लाइन में लगना पसंद नहीं है तथा जो बैंकों के कार्यालय समय में उपस्थित नहीं हो सकते हैं! डेबिट कार्ड एटीएम मशीन की सहायता से 24*7 सुविधा उपलब्ध कराते हैं! डेबिट कार्ड, बैंक खाते से लिंक होता है! अतः खाते में पड़ी समस्त राशि का प्रयोग डेबिट कार्ड की सहायता से कर सकते हैं! डेबिट कार्ड का प्रयोग दुकान पर पोस मशीन पर, वॉलेट, ऑनलाइन शॉपिंग इत्यादि में किया जा सकता है! लेकिन भारत में सामान्यतः डेबिट कार्ड का प्रयोग एटीएम से पैसा निकालने हेतु किया जाता है!

प्रकिया:- कोई भी वर्तमान खाताधारक या नया खाता खुलवाकर डेबिट कार्ड हेतु आवेदन किया जा सकता है! कार्ड प्राप्ति के बाद पिन नंबर की प्राप्ति होती है, जिसका प्रयोग करके कार्ड को सक्रिय किया जाता है! डेबिट कार्ड को स्वाइप करके भुगतान किया जा सकता है अथवा ऑनलाइन व्यवहार में डेबिट कार्ड की सूचनाएं एवं पिन नंबर का प्रयोग करके व्यवहार को संपन्न किया जा सकता है!

ऑनलाइन व्यव्हार में सुरक्षा के लिहाज से बैंकों द्वारा पंजीकृत नंबर पर ओटीपी भेजा जाता है! डेबिट कार्ड का प्रयोग पोस मशीन, एटीएम मशीन, माइक्रो एटीएम, ऑनलाइन शॉपिंग, ई-कॉमर्स की वेबसाइट पर किया जा सकता है! साथ ही साथ डेबिट कार्ड की सहायता से उसी बैंक खातो मे फंड का हस्तांतरण भी किया जा सकता है!

क्रेडिट कार्ड से भुगतान

क्रेडिट कार्ड सामान्यता "आज खरीदो एवं बाद में भुगतान करो" कि प्रणाली पर कार्य करते हैं! ग्राहक की स्थिति व प्रतिष्ठा के अनुसार बैंक, ग्राहकों को अलग अलग साख प्रदान करता है! ग्राहक अपनी साख (उधार) का प्रयोग आवश्कता अनुसार कर सकता है तथा एक निर्धारित समयावधि के बाद उस प्रयोग की गई साख के बराबर राशि बैंक में निर्धारित शुल्क के साथ जमा करानी पड़ती है! इस प्रकार यह साख, बैंक द्वारा ग्राहक को दिया गया ऋण होता है!

बैंक द्वारा ग्राहक की क्रेडिट सीमा तय करते समय कई घटक को ध्यान में रखा जाता है जैसे भूतकालीन साख स्कोर, जॉब की स्थिरता, बैंक से लिए गए अन्य कर्ज इत्यादि! डेबिट कार्ड व् क्रेडिट कार्ड की कार्यप्रणाली लगभग समान है अर्थात दोनों कार्ड का प्रयोग स्वाइप करके अथवा ऑनलाइन व्यापार हेतु किया जा सकता है!

डेबिट कार्ड व क्रेडिट कार्ड में मूलभूत अंतर यह है कि डेबिट कार्ड में ग्राहक पहले अपने खाते में धन जमा कराता है फिर आवश्यकता अनुसार

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

उसका उपयोग करता है जबकि क्रेडिट कार्ड में ग्राहक पहले अपनी साख का प्रयोग करता है (अर्थात उसे खर्च करता है) तथा बाद में उसका भुगतान बैंक में जमा कराता है!

नेट बैंकिंग से भुगतान

इस सुविधा को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे ऑनलाइन बैंकिंग, वर्चुअल बैंकिंग इत्यादि! "बैंकिंग सेवा का प्रयोग कहीं भी तथा कभी भी" यह बात नेट बैंकिंग पर पूर्णतया सत्य लागू होती है! इसमें बैंक द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं को इंटरनेट की सहायता से कंप्यूटर, मोबाइल या अन्य साधन के माध्यम से कहीं भी प्रयोग किया जा सकता है! अर्थात इसमें ग्राहक घर बैठे बैंक की सभी सुविधाओं का उपयोग कर सकता है!

प्रकिया:- इस सुविधा का प्रयोग करने हेतु ग्राहक को सर्वप्रथम बैंक से यूजर आईडी तथा पासवर्ड प्राप्त करने होते हैं, फिर इंटरनेट की सहायता से ग्राहक बैंक की सभी सुविधाओं को प्राप्त कर सकता है! जैसे खाते की शेष की जानकारी प्राप्त करना, खातो के व्यवहार का विवरण पत्र प्राप्त करना, लोन के लिए आवेदन करना, बीमा पॉलिसी की खरीद तथा उसके प्रीमियम का भुगतान करना, किसी तीसरे पक्षकार को हस्तांतरण करना इत्यादि! नेट बैंकिंग के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार के व्यवहार लोकप्रिय है:-

नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (नेफ्ट)

यह एक राष्ट्रव्यापी भुगतान प्रणाली है, जिसकी सहायता से कोई भी व्यक्ति विशेष, फर्म या कॉरपोरेट द्वारा इलेक्ट्रॉनिक रूप से फंड का स्थांतरण किया जा सकता है! यहां तक कि ऐसे व्यक्ति जिनका बैंक में खाता नहीं है, वह व्यक्ति भी एनईएफटी संपन्न बैंक शाखा के माध्यम से एनईएफटी में नकद जमा करा सकते हैं!

रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (आरटीजीएस)

सामान्यतः इस सेवा का प्रयोग अधिक राशि का हस्तांतरण करने हेतु किया जाता है! आरटीजीएस के माध्यम से प्रेषित की जाने वाली राशि न्यूनतम भी 2,00,000 रूपये होती है तथा अधिकतम की कोई सीमा तय नहीं है!

इलेक्ट्रॉनिक क्लेयरिंग सिस्टम (ईसीएस)

यह सुविधा उन लोगों के लिए सर्वोत्तम है, जो लोग कागजी कार्रवाई की झंझट से मुक्ति पाना चाहते हैं! इस सेवा में सामान्यतः उपयोगिता बिल जैसे टेलीफोन बिल, बिजली का बिल, बीमा प्रीमियम, कर्ज अदायगी इत्यादि हेतु इस सुविधा का प्रयोग करते हैं!

इमीडियेट पेमेंट सर्विस (IMPS)

यह एक तत्काल भुगतान सेवा है! जो 24*7 सुविधा उपलब्ध कराती है! यह अंतरस्तरीय बैंक फ़ंड हस्तांतरण की सेवा है जिसे मोबाइल फोन द्वारा संचालित किया जा सकता है!

मोबाइल वॉलेट द्वारा भुगतान

आज के इस दूरसंचार युग में जब मोबाइल प्रत्येक व्यक्ति की जेब में पहुंच रहा है, ऐसे समय में मोबाइल वॉलेट नकदविहीन लेनदेन (कैशलेस) का एक प्रभावी माध्यम साबित हो सकता है! मोबाइल वॉलेट, स्मार्टफोन में मौजूदा एक आभासी बटुआ (वर्चुअल पर्स) होता है,

जिसमें डिजिटल रूप में मुद्रा उपलब्ध होती है! व्यक्ति इस डिजिटल पर्स में रखी हुई मुद्रा का प्रयोग कहीं भी तथा कभी भी कर सकता है!

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.
ISSN: 2581-401X

मोबाइल वॉलेट के अंतर्गत विभिन्न कंपनियों के एप्प तथा विभिन्न बैंकों द्वारा जारी ई-वॉलेट एप्प शामिल है! जैसे एसबीआई का buddy, axis बैंक का LIME, आईसीआईसीआई का POCKET इत्यादि तथा विभिन्न कंपनियों के एप्प, जैसे paytm, mobikwik, ऑक्सीजन, रिलायंस मनी इत्यादि! प्रकिया:- इस सुविधा हेतु सर्वप्रथम स्मार्ट फोन में ऐप डाउनलोड किया जाता है, फिर ऑनलाइन डेबिट कार्ड की सहायता से इस वॉलेट में राशि स्थांतरित की जाती है, बाद में इस डिजिटल मनी का उपयोग कहीं भी आवश्यकतानुसार कर सकते हैं!

पॉइंट ऑफ सेल (पोस)

पोस यानी वह स्थान जहां विक्रय किया जाता है! व्यापक स्तर पर पोस से आशय शॉपिंग मॉल, बाजार, या शहर हो सकता है! लेकिन सूक्ष्म स्तर पर पोस का तात्पर्य वह स्थान होता है, जहां दुकानदार ग्राहक से सौदा पूर्ण करता है! जैसे शॉपिंग मॉल का चेक आउट काउंटर! पोस मशीने तीन प्रकार की होती हैं! जो निम्नलिखित प्रकार से है:-

भौतिक रूप से पॉइंट ऑफ सेल

इस साधन का उपयोग करने हेतु उपकरण (बॉयोमीट्रिक्स रीडर अथवा कार्ड सहित) जुडा होता है जिसकी कनेक्टिविटी जीपीआरएस या लैंड्लाइन से होती है! इस सुविधा का प्रयोग करने हेतु व्यापारी का बैंक में खाता होना चाहिए! इस सेवा को शुरू करने के लिए सर्वप्रथम व्यापारी बैंक में कागजी कार्रवाई करके तथा कुछ राशि जमा कर के उपकरण की प्राप्ति करता है! फिर कुछ बुनियादी प्रशिक्षण उस उपकरण को संचालित करने का लिया जाता है! इसमे व्यवहार करने के लिए सर्वप्रथम इस उपकरण में कार्ड को स्वाइप किया जाता है फिर राशि व पिन नंबर दर्ज किया जाता है! व्यवहार संपन्न होने पर अंत में रशीद की प्राप्ति होती है!

मोबाइल पोस

इस प्रणाली का उपयोग करने हेतु अग्रलिखित साधनों की जरूरत पड़ती है : स्मार्टफोन, बैंक का एप, बाह्य कार्ड अथवा बायोमेट्रिक रीडर, इंटरनेट सुविधा या वाईफाई, रीडर को जेक अथवा ब्लूटूथ द्वारा मोबाइल से संपर्क किया जाता है! इस भुगतान प्रणाली को सक्रिय करने हेतु सर्वप्रथम व्यापारी बैंक में खाता खोलकर बैंक का ऐप डाउनलोड करता है, फिर उपक्रम को पंजीकृत करके आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करता है! मोबाइल को जेक या ब्लूटूथ से उपकरण को जोड़ा जाता है, जोड़े गए उपकरण में कार्ड को स्वाइप किया जाता है! फिर ग्राहक के मोबाइल नंबर तथा ईमेल सूचनाएं दर्ज करने के पश्चात ग्राहक के हस्ताक्षर मिलान होते हैं तथा सोदा संपन्न हो जाता है! जिसकी सूचना मैसेज से मिल जाती है!

वर्चुअल पोस

इसमें किसी भी प्रकार की पोस मशीन की आवश्यकता नहीं रहती! यह एक प्रकार का ई-पेमेंट गेटवे है! इसमें प्रत्येक विक्रेता का अलग-अलग क्यूआर कोड होता है, भुगतान करने व पाने वाले इसी क्यूआर कोड का प्रयोग करते हैं! ग्राहक भुगतान करने हेतु क्यूआर कोड को स्कैन करता है! इससे अपने बैंक संबंधी जानकारियां उनको सुरक्षित रहती है!

यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI)

भारत में मोबाइल वॉलेट की कामयाबी के बाद भारत सरकार ने डिजिटलीकरण की दिशा में अपने कदम और तेजी से बढ़ाने शुरू किए हैं! यूपीआई उसी दिशा में सरकार द्वारा बढ़ाया हुआ एक कदम है! भारत में डिजिटल लेनदेन

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

को बढ़ावा देने हेतु एक साझा आधारभूत ढांचे की आवश्यकता थी! इस कमी की पूर्ति एनपीसीआई यानी नेशनल पेमेंट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया ने किया है! एनपीसीआई ने एक यूनिक पेमेंट का ढांचा तैयार किया, जिसकी सहायता से व्यक्ति अपने मोबाइल फोन से किसी भी खाते में धन का हस्तांतरण कर सकता है! इसमें केवल पंजीकरण करते समय ही बैंक खाते का विवरण देना पड़ता है! इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी सभी लेन-देन में बार-बार अपने खाते का विवरण नहीं देना पड़ता! इससे भुगतान करने के लिए एक वर्चुअल एड्रेस बनाया जाता है, फिर उसी वर्चुअल एड्रेस की सहायता से भुगतान कीया जा सकता है! इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि हमें अलग-अलग बैंक के लिए अलग-अलग आईडी बनाने की जरूरत नहीं पड़ती, बल्कि एक ही यूनिक आईडी से सभी बैंक खातों के साथ व्यवहार किया जा सकता है! इस प्रकार इसमें व्यक्ति को सभी जगह अपने खातों का विवरण देना आवश्यक नहीं होता! साथ ही यह सुविधा 24*7 उपलब्ध है! भारत में लगभग 28 बैंकों जैसे यूपीआइ आधारित ऐप उपलब्ध है, जिन के कुछ प्रमुख उदाहरण sbi app, axis pay, obc upi इत्यादि है! इसके अलावा phonepe, भीम एप इत्यादि भी इसके उदाहरण है!

प्रकिया:- यूपीआइ में पंजीकरण करने हेतु सर्वप्रथम स्मार्ट फोन में किसी भी बैंक या अन्य का ऐप डाउनलोड करके फिर उसमें अपने आधार नंबर या मोबाइल नंबर को अपना वर्चुअल पेमेंट एड्रेस बनाया जा सकता है! बैंक खाते का विवरण दिया जाता है तथा व्यवहार करने हेतु mpin निर्धारित की जाती है! जिनकाउपयोग करके व्यवहार पूर्ण हो जाता है!

यूएसएसडी द्वारा भुगतान

यह सुविधा उन लोगों के लिए विशेष उपयोगी है, जिनके पास स्मार्टफोन एवं इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है! इस सुविधा का उपयोग एक साधारण मोबाइल से भी किया जा सकता है क्योंकि इसमें इंटरनेट की आवश्यकता नहीं रहती अत: यह मोबाइल बैंकिंग सुविधा है! अनस्ट्रक्चर एंड सप्लीमेंट्री सर्विस डाटा में *999# डायल कर के विभिन्न बैंकिंग सेवा प्राप्त की जा सकती है जैसे खाते का शेष, हस्तांतरण, मिनी स्टेटमेंट इत्यादि! इसकी सबसे खास बात यह है कि *999# नंबर सभी टेलीकॉम कंपनियों के लिए एक ही रहता है! वर्तमान में लगभग 51 बैंक एवम सभी टेलीकॉम कंपनियां इस नंबर पर हिंदी व् अंग्रेजी समेत लगभग 12 भाषाओं में सेवा दे रही है!

प्रकिया:- इस सुविधा का प्रयोग करने हेतु सर्वप्रथम अपने मोबाइल नंबर को अपने बैंक खाते से लिंक कराना पड़ता है, फिर यू एस एस डी के लिए पंजीकरण कराना पड़ता है, पंजीकरण के दौरान एमएमआईडी यानी मोबाइल मनी आइडेंटीफायर तथा ऍमपिन यानी मोबाइल पिन प्राप्त होता है! भविष्य में इन्ही mpin व् mmid की सहायता से ही व्यवहार किए जाते हैं!

माइक्रो एटीएम द्वारा भुगतान

यह प्रणाली एईपीएस (आधार इनेबल पेमेंट सिस्टम) पर आधारित है! इस प्रणाली में व्यापारिक प्रतिनिधि, एक माइक्रो एटीएम की भांति कार्य करते हैं! इसमें हमारा आधार कार्ड हमारे डेबिट कार्ड के रूप में कार्य करता है!

प्रकिया:- इस सेवा का उपयोग करने हेतु सर्वप्रथम बैंक खाते को आधार कार्ड से लिंक किया जाता है! फिर व्यापारिक प्रतिनिधि जोकि माइक्रो एटीएम की भांति कार्य करते हैं उनकी सहायता से बिना पासवर्ड के खातों के शेष की जानकारी, नगद पैसा जमा कराना, पैसा निकालना, खरीदारी, आधार-से-आधार धन का

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

हस्तांतरण इत्यादि सेवाएं प्राप्त की जा सकती है! इसमें पोस मशीनों पर उंगलियों का स्कैन करके व्यव्हार किया जा सकता है! व्यवहार करने हेतु आधार नंबर तथा खाता संख्या ज्ञात होनी चाहिए!

सारांश

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कैशलेस के नित्य नए-नए माध्यम हमारे सामने आ रहे हैं! सरकार जनता की जरूरत व सुविधा के अनुसार उन्हें कैशलेस के विभिन्न माध्यम उपलब्ध करा रही है, साथ ही दूसरी तरफ दूरसंचार सेवा प्रदाता कंपनी भी इसमें अपना अहम भूमिका निभा रही है! अतः कैशलेस के मौजूदा विकल्पों को देख कर लगता है कि आने वाले समय में भारत में डिजिटल लेनदेन के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार होगा जिससे भारत तेज गति से कैशलेस इंडिया की तरफ कदम बढ़ा सकेगा!

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. दैनिक भास्कर!
[2]. राजस्थान पत्रिका!
[3]. www.google.com.
[4]. www.wikipedia.com.
[5]. http://www.livemint.com.
[6]. http://economictimes.indiatimes.com/topic/cashless.
[7]. http://www.sarkariyojna.co.in/10-cashless-digital-payment.
[8]. http://moneyexel.com/15775/10best cashlesspayment.
[9]. http://cashlessindia.gov.in/.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X